प्रेस विज्ञप्ति

एक्ज़िम बैंक ने अपने अंतरराष्ट्रीय आर्थिक विकास शोध (आई ई डी आर ए) वार्षिक पुरस्कार 2009 के विजेता की घोषणा की

1. डॉ. देबाशीष मंडल को उनके शोध प्रबंध ''इनोवेशन, इमिटेशन एंड नॉर्थ साउथ ट्रेड : इकॉनोमिक थ्योरी एंड पॉलिसी'' के लिए भारतीय निर्यात-आयात बैंक के अंतरराष्ट्रीय आर्थिक विकास शोध वार्षिक (आई ई डी आर ए) पुरस्कार 2009 प्रदान किया गया है। एक्ज़िम बैंक ईडरा पुरस्कार 2009 की घोषणा 26 जुलाई, 2010 को नई दिल्ली में आयोजित एक समारोह में एक्ज़िम बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री टी. सी. ए. रंगनाथन ने की। मुख्य अतिथि डॉ. कौशिक बसु, मुख्य आर्थिक सलाहकार, भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, नई दिल्ली ने पुरस्कार विजेता को एक लाख रुपये की पुरस्कार राशि तथा प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया। इस अवसर पर उन्होंने पुरस्कृत शोध प्रबंध पर आधारित एक्ज़िम बैंक के प्रासंगिक आलेख ''इनोवेशन, इमिटेशन एंड नॉर्थ साउथ ट्रेड : इकॉनोमिक थ्योरी एंड पॉलिसी'' का विमोचन भी किया।

2. ईडरा पुरस्कार के बारे में जानकारी देते हुए एक्ज़िम बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री टी. सी. ए. रंगनाथन ने बताया कि 1989 में स्थापित किया गया ईडरा पुरस्कार अंतरराष्ट्रीय आर्थिक व्यापार एवं विकास तथा संबंद्ध वित्तपोषण के क्षेत्र में भारतीय नागरिकों द्वारा भारतीय अथवा विदेशी विश्वविद्यालयों में किए गए शोध प्रबंधों पर प्रदान किया जाता है। वर्ष 2009 पुरस्कार का इक्कीसवां वर्ष है। पुरस्कृत शोध प्रबंध के बारे में जानकारी देते हुए श्री रंगनाथन ने कहा कि यह शोध प्रबंध आर्थिक वृद्धि और विकास की दिशा में अग्रसर विकसित उत्तर तथा विकासशील दक्षिण के बीच के संबंधों के महत्वपूर्ण मुद्दों को रेखांकित करता है। इससे इस क्षेत्र में शोधार्थियों द्वारा और नए शोध अध्ययनों को बढ़ावा मिलेगा। अंतरराष्ट्रीय अर्थशास्त्र, व्यापार एवं विकास में शोध को बढ़ावा देने के लिए एक्ज़िम बैंक की सराहना करते हुए डॉ. बसु ने कहा कि एक्ज़िम बैंक का ईडरा अवार्ड मौलिक शोध को बढ़ावा देने के क्षेत्र में एक मील का पत्थर साबित हुआ है।

पुरस्कृत शोध प्रबंध

3. डॉ. देबाशीष मंडल ने इंडियन स्टेटीस्टिकल इंस्टीट्यूट (आई एस आई), कोलकाता, से वर्ष 2009 में अपनी डॉक्टरेट की उपाधि हासिल की तथा वर्तमान में वे नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ सिंगापुर में अर्थशास्त्र विभाग में पोस्ट डॉक्टोरल फेलो के पद पर कार्यरत हैं। अपने शोध

प्रबंध में डॉ.मंडल ने विकासशील देशों द्वारा लागू की गई सशक्त बौद्धिक संपदा अधिकार संरक्षण (आई पी आर प्रोटेक्शन) नीतियों के आर्थिक वृद्धि, प्रौद्योगिकी अंतरण तथा उत्तर और दक्षिण के बीच आय वितरण पर पड़ने वाले दीर्घकालिक प्रभावों का विश्लेषण किया है। इसके साथ ही उन्होंने उत्तर एवं दक्षिण के बीच बड़े पैमाने पर आर्थिक एकीकरण (या वैश्वीकरण) से राष्ट्रों के विकास एवं कल्याण पर पड़ने वाले प्रभावों का भी विश्लेषण किया है। पूरे अध्ययन में सैद्धान्तिक विश्लेषणों को प्रायोगिक आंकड़ों से सिद्ध किया गया है।

4. वे सैद्धांतिक मॉडल जो इन मुद्दों पर प्रकाश डालते हैं प्रायः उस उत्तर-दक्षिण फ्रेमवर्क को आधार बनाते हैं जिसमें उत्तर नवोन्मेषी दक्षिण की नकल करता है। इस तरह का फ्रेमवर्क महत्वपूर्ण है क्योंकि सशक्त बौद्धिक संपदा संरक्षण (आई पी आर प्रोटेक्शन) प्रणाली का स्वरूप सरकार के लोक कल्याणकारी कार्यों के बीच तालमेल निर्धारित करता है। सशक्त बौद्धिक संपदा संरक्षण (आई पी आर प्रोटेक्शन) नीतियां जहां एक ओर नवोन्मेषों के लिए बड़े जोखिम लेने के लिए प्रोत्साहन देती है वहीं दूसरी ओर आर्थिक क्षेत्र में एकाधिकार वाले क्षेत्रों, जो समग्र निष्पादन को सीमित करते हैं की संख्या को बढ़ावा देती है। वर्तमान विश्व में, जहां विभिन्न अर्थव्यवस्थाएं व्यापार के जरिए उच्च स्तर पर एकीकृत हैं, किसी भी देश में किए गए नीतिगत परिवर्तनों का प्रभाव उसके व्यापारिक सहभागियों पर पड़ता है। पुरस्कृत अध्ययन में, उत्तर-दक्षिण व्यापार से संबंधित कुछ सैद्धांतिक मुद्दों को विशेषकर दक्षिण में सशक्त बौद्धिक संपदा अधिकार संरक्षण नीतियों के कार्यान्वयन के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषित किया गया है। साथ ही उत्तर तथा दक्षिण के बीच सशक्त बौद्धिक संपदा संरक्षण (आई पी आर प्रोटेक्शन) नीतियों के कार्यान्वयन को लेकर उठ रहे विवादों को उस गत्यात्मक सामान्य संतुलन फ्रेमवर्क में पुनः परखा गया है जिसमें उत्तर नए उत्पादों की खोज करता है तथा दक्षिण उसकी नकल करता है। दक्षिण द्वारा अपनाई गई सशक्त बौद्धिक संपदा संरक्षण नीतियों (आई पी आर प्रोटेक्शन पॉलिसी) के वृद्धि एवं विकास पर पड़ने वाले प्रभावों का भी इस शोध अध्ययन में बाहरी प्रतिरूपण मॉडल तथा घरेलू प्रतिरूपण मॉडल के परिप्रेक्ष्य में विस्तार से मूल्यांकन किया गया है। अध्ययन दक्षिण की सशक्त बौद्धिक संपदा संरक्षण (आई पी आर प्रोटेक्शन) नीतियों और बहुराष्ट्रीयकरण (या उत्तर से दक्षिण विदेशी प्रत्यक्ष निवेश) तथा दक्षिण में अकुशल श्रमिकों की बेरोजगारी तथा घरेलू वेतन असमानता के बीच के संबंधों को भी विश्लेषित करता है।

भारतीय निर्यात-आयात बैंक

5. भारतीय निर्यात-आयात बैंक का उद्देश्य भारत के अंतरराष्ट्रीय व्यापार का सवर्द्धन करना है। बैंक अपने शोध तथा अनुसंधान प्रयासों के माध्यम से भारतीय कंपनियों को सूचना एवं सलाहकारी सेवाओं की एक व्यापाक श्रेणी प्रदान करता है तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उन्हें प्रतिस्पर्धी बढ़त हासिल करने में उनकी मदद करता है। अंतरराष्ट्रीय आर्थिक विकास शोध वार्षिक (आई ई डी आर ए) पुरस्कार अंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था, व्यापार तथा विकास के क्षेत्रों में वित्तपोषण संबंधी शोध एवं विश्लेषण को बढ़ावा देता है।

विस्तृत जानकारी के लिए कृपया संपर्क कीजिए : श्री डेविड सिनाटे, महाप्रबंधक, शोध एवं आयोजना समूह, भारतीय निर्यात-आयात बैंक, केंद्र -एक, 21 वीं मंज़िल, विश्व व्यापार केंद्र संकुल, कफ़ परेड, मुंबई-400 005 टेलीफोनः (022) 22172322 फैक्सः (022) 22180743;
ई-मेलः dsinate@eximbankindia.in